आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्य, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव' | मूल्य ▸ 5 | वर्ष ▸15 | अंक ▸170 | मुद्रण तारीख ▸1 फरवरी, 2026 | कुल पृष्ठ ▸20

जहाँ करुणा बनती है बदलाव की ताक़त

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Nar Seva Narayan Seva

45वां
दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

आपश्री सादर
आमंत्रित है।

YouTube
LIVE

दिनांकः
14-15 मार्च, 2026
स्थानः सेवा महातीर्थ
बड़ी, उदयपुर (राज.)

सेवा सौभाग्य

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸15
अंक ▸170 कुल पृष्ठ ▸20

मुद्रण तारीख ▸1 फरवरी, 2026

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva
Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222
वाट्सऐप: +91-7023509999
Web www.spdtrust.org
E-mail info@spdtrust.org

Seva Soubhagya
Print Date 1 February, 2026
Registered Newspaper No.
RAJBIL/2010/52404
Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 20 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में

टूटे सपने फिर जुड़े 06

'महाशिवरात्रि' 08

भूणाव में 102 दिव्यांगजन लाभान्वित 09

संस्थान प्रणेता का अभिनन्दन 10

वनवासी अंचल में मानवता का उत्सव 12

झीनी झीनी रोशनी - 81 23

श्रम, संघर्ष और संकल्प

सेवक प्रशान्त भैया

संकल्प – शक्ति के बल पर व्यक्ति अपने जीवन की मुश्किलों को परास्त करते हुए इच्छित परिवर्तन ला सकता है। संकल्प का सृजन विचार से होता है। सकारात्मक सोच हमेशा सकारात्मक परिणाम देती है। प्राचीन काल में महर्षियों ने कठिन तप करके अद्भुत सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। हमारे चारों ओर भी विचारों की लहरें उठती रहती हैं। उनमें से हम जो ग्रहण करते हैं, अंततः वही हमारे जीवन पर प्रभाव डालती हैं। हर व्यक्ति का अपना एक विचार–संसार होता है, जो उसके जीवन की दशा और दिशा के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विचार जितना अधिक बलशाली होगा, उतनी ही शीघ्रता से वह फलित भी होगा। विचार को हम जिस निश्चित दिशा में और जिस अनुपात में केंद्रित करेंगे, उसी अनुपात में वह लक्ष्य–सिद्धि में सफल होगा।

विचार को संकल्प और संकल्प को यथार्थ में बदलना मन की साधना है। बस शर्त यही है कि विचार के साथ आचार भी शुद्ध और सात्विक होना चाहिए। जिसका विचार शुद्ध होगा, उसका मन भी उतना ही निर्मल और मजबूत होगा, जो हर कठिन परिस्थिति को आसान बना देगा। यहाँ मैं टेनेसी (अमेरिका) में रहने वाली एक दिव्यांग बालिका का प्रसंग प्रस्तुत करना चाहूँगा। विल्मा ग्लोडीन रुडोल्फ चार वर्ष की उम्र में निमोनिया और काला ज्वर की शिकार हो गई। फलतः उसके पैरों में लकवा मार गया। डॉक्टरों ने कहा–"अब विल्मा कभी चल नहीं सकेगी।" विल्मा का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ, लेकिन उसकी माँ विचारों की धनी थी। उसने ढाढ़स बंधाया– "नहीं विल्मा, तुम चल सकती हो, यदि चाहो तो।" विल्मा की इच्छा–शक्ति जागृत हुई। उसने जीवन की इस बड़ी चुनौती को हराने का संकल्प लिया। क्योंकि उसकी माँ ने यह भी कहा था –"यदि आदमी के विचार सकारात्मक हों, ईश्वर में विश्वास रखते हुए मेहनत और लगन से कठिनाइयों से जूझे, तो वह कुछ भी कर सकता है।" बंधुओं! आपके अपने नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांग बंधु–बहिनों का निःशुल्क उपचार तो होता ही है, साथ ही उनमें संकल्प–शक्ति के विकास के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। रोजगारोन्मुख क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा 'हर दूसरे–तीसरे माह 'अपनों से अपनी बात' जैसी गतिविधियाँ इसी श्रृंखला की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं।

लकवा होने के बावजूद विल्मा ने घर पर ही पढ़ना–लिखना और बैसाखियों के सहारे चलना सीखा। 15 वर्ष की उम्र में वह विश्वविद्यालय में दाखिल हुई, जहाँ उसकी मुलाकात एड टेम्पल नामक एक कोच से हुई। उसने उनसे कहा – "आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं? मैं एक तेज धाविका बनना चाहती हूँ।"

कोच ने पहले उसे गौर से देखा। एक दिव्यांग लड़की धाविका बनने का सपना देख रही थी, लेकिन वह उसकी इच्छा–शक्ति से प्रभावित हुआ। उसने कहा –"मिस विल्मा! तुम्हारे संकल्प के आगे कोई बाधा टिक नहीं सकती। मैं तुम्हारे साथ दोडूंगा।" ट्रैक एंड फील्ड (दौड़) में वर्ष 1960 के रोम ओलंपिक में विल्मा ने तीन स्वर्ण पदक जीते। ऐसा करने वाली वह पहली अमेरीकी महिला बनी। उसका मुकाबला विश्व की तेज धाविका जुट्टा हाइन से हुआ। कोई सोच भी नहीं सकता था कि कभी अपंग रही बालिका वायु–वेग से दौड़ भी सकती है। विचारों में अद्भुत शक्ति है। उनसे न केवल रोग दूर होते हैं, बल्कि मनोवृत्ति भी बदल जाती है। शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ व्यक्ति को मानसिक स्वास्थ्य अर्थात् मन को भी मजबूत करना चाहिए, क्योंकि विचारों और संकल्प की तरंगें वहीं से उठती हैं। इस सत्य को विल्मा ने अपने जीवन में सिद्ध कर दिया। खेल और समाज में उसके योगदान के लिए उसे अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। वास्तव में सफलता की राह कठिनाइयों के बीच से ही होकर गुजरती है।

> **"विचार ही संकल्प का जन्मदाता है। जिसका विचार शुद्ध और सकारात्मक होता है, उसका मन कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अडिग और विजयी बना रहता है।"**

प्राण ही सबमें श्रेष्ठ

हर व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का अपना विशिष्ट महत्व होता है। समाज भी इसी प्रकार बनता और विकसित होता है। जहाँ भिन्न-भिन्न विशेषताओं वाले लोग मिलकर एक समग्र स्वरूप रचते हैं। कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि समाज केवल किसी एक व्यक्ति या वर्ग के कारण चलता है। समाज की गति, प्रगति और संतुलन सभी के सहयोग से ही संभव होता है।

मानव शरीर भी इसका सजीव उदाहरण है। शरीर इसलिए जीवंत है क्योंकि उसमें अनेक इंद्रियाँ सक्रिय रहती हैं और प्रत्येक की अपनी–अपनी भूमिका होती है। किंतु इन सभी इंद्रियों से भी अधिक महत्वपूर्ण एक और तत्व है, प्राण। प्राण के बिना शरीर केवल जड़ और निष्प्राण संरचना मात्र रह जाता है। इसलिए व्यक्ति को कभी भी अपनी विशेषता को लेकर अहंकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि उसके व्यक्तित्व के निर्माण में माता–पिता के साथ–साथ समाज, परिस्थितियाँ और असंख्य लोगों का योगदान निहित होता है।

एक बार सभी इंद्रियों में यह विवाद उत्पन्न हो गया कि उनमें सबसे श्रेष्ठ कौन है? बहुत तर्क–वितर्क के बाद भी कोई निष्कर्ष नहीं निकल पाया। अंततः सभी इंद्रियाँ प्रजापिता ब्रह्मा के पास पहुँचीं और विनम्रतापूर्वक प्रश्न किया– "पितामह! हममें से सबसे श्रेष्ठ कौन है?" प्रजापिता ने उत्तर दिया– "तुममें से जिसके निकल जाने पर शरीर नाकारा हो जाए, वही श्रेष्ठ मानी जाएगी।" इंद्रियों ने इस कथन की परीक्षा लेने का निश्चय किया। सबसे पहले वाणी शरीर से बाहर गई। एक वर्ष पश्चात जब वह लौटी, तो अन्य इंद्रियों ने कहा – "तुम्हारे बिना हम गूंगे के समान थीं। हम प्राण के सहारे सांस लेते रहीं, आँखें देखती रही, कान सुनते रहे और मन सोचता भी रहा, किंतु अपने भाव व्यक्त नहीं कर सकीं।"

इसके बाद दृष्टि शरीर से बाहर गई। लौटने पर उसे बताया गया– "तुम्हारे बिना हम अंधे के समान थे। बोलना, सुनना और सोचना संभव था, पर बिना देखे आगे बढ़ना असंभव था।" फिर श्रवणेंद्रिय (कान) शरीर से बाहर गई। लौटने पर उसे बताया गया– "तुम्हारे बिना हम बहरे के समान थीं। बोलती थीं, देखती थीं, सोचती भी थीं, किंतु किसी की बात सुन नहीं पाती थीं।" इसके पश्चात मन शरीर से बाहर गया। जब वह लौटा, तो इंद्रियों ने कहा–"तुम्हारे बिना हम विचार–शक्ति से रहित रहीं। सोच–समझ के अभाव में न सृजन था, न नवीनता।"

इस प्रकार सभी इंद्रियों को अपनी–अपनी उपयोगिता का बोध तो हो गया, किंतु श्रेष्ठता का प्रश्न अब भी अनुत्तरित था। तभी, अब तक मौन साधे बैठे प्राण ने इंद्रियों को सच्चा पाठ पढ़ाने का निश्चय किया और शरीर से बाहर निकलने की प्रक्रिया आरंभ की।

जैसे ही प्राण बाहर जाने लगा, शरीर में तीव्र हलचल मच गई। सभी इंद्रियाँ विचलित हो उठीं। शरीर शिथिल और निस्तेज होने लगा। तभी सबको अपने अहंकार का बोध हुआ और उन्होंने एक स्वर में प्राण की सर्वोच्च महत्ता स्वीकार कर ली। प्राण के पुनः शरीर में स्थिर होते ही शरीर फिर से जीवंत, सक्रिय और चेतन हो उठा।

बंधुओं! एक श्रेष्ठ समाज की रचना में हर व्यक्ति, वर्ग, उद्यम, उत्पाद और स्थान का महत्व है। यदि इसमें से एक भी कड़ी कमजोर होती है, तो समाज का पूरा ढांचा चरमरा उठता है। अतएव हम सब एक जुटता कायम रखें और परस्पर सम्मान करें।

पूज्य श्री कैलाश 'मानव'

टूटे सपने फिर जुड़े

बिहार के मुजफ्फरनगर जिले के विजय कुमार (24) आज फिर से अपने जीवन को आत्मविश्वास और उम्मीद के साथ जी रहे हैं। वर्ष 2019 में हुए एक भयावह ट्रेन हादसे ने उनका सपना छीन लिया था। उन्होंने अपने दोनों पैर खो दिए। घर से खुशी–खुशी काम के लिए निकले थे। लेकिन विधना को कुछ ओर ही मंजूर था। अचानक हादसे का दुख पूरे परिवार पर भी पहाड़ बनकर टूटा... कुछ समय तक वे खुद को असहाय महसूस करते रहे, परंतु हार मान लेना बचपन से ही उनकी फितरत में नहीं था।

परिवार की आर्थिक स्थिति भी ऐसी न थी कि वे कृत्रिम अंग लगवाने की सोचते। उन्होंने बैसाखी सहारे ही सही लेकिन जिन्दगी को सक्रिय रखने की ठानी।

इसी बीच, विजय को नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। जब वे संस्थान पहुंचे, तो डॉक्टरों और विशेषज्ञों ने उनके लिए नारायण आर्टिफिशियल लिम्ब तैयार किए। यह उनके लिए मानों नई शुरुआत थी। कृत्रिम पैरों की सहायता से उन्होंने न केवल चलना सीखा बल्कि जीवन को आर्थिक पक्ष से जोड़ने का संकल्प भी लिया। संस्थान के कौशल विकास प्रकल्प के तहत कंप्यूटर प्रशिक्षण लेने का निश्चय किया, जिसमें एमएस ऑफिस, इंटरनेट, टाइपिंग और डिजिटल संचार जैसे विषयों की जानकारी थी। विजय ने इस प्रशिक्षण को पूरे समर्पण से पूरा किया और अब वे अपने दम पर डिजिटल कार्यों से परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत बनाने की दिशा में सक्रिय हैं। विजय कहते हैं–संस्थान ने मुझे केवल पैर नहीं दिए, बल्कि जीने का नया उद्देश्य दिया है। अब वे भी आत्मनिर्भर भारत की सोच को साकार करने की राह पर चलकर अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

संस्थान में निखरी मधुबनी की चांदनी

जन्म से ही शारीरिक विकृति से पीड़ित होने के कारण चांदनी अपने पैरों पर ठीक से खड़ी भी नहीं हो पाती थी। चलना-फिरना उसके लिए अत्यंत कठिन था, और बचपन निरंतर संघर्षों में बीता।

यह कहानी बिहार के मधुबनी जिले की 18 वर्षीय चांदनी की है, जो 3 वर्ष की उम्र से ही दोनों पैरों के घुटनों से तिरछे और मुड़े होने की गंभीर दिव्यांगता से पीड़ित थी। जैसे–जैसे उम्र बढ़ती गई, उसकी परेशानियाँ भी बढ़ती चली गईं। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए उसे हमेशा किसी न किसी सहारे की आवश्यकता पड़ती थी। घर में बैठे–बैठे वह हीन भावना और निराशा की शिकार होती जा रही थी।

चांदनी अपने माता–पिता और चार भाई–बहनों के साथ रहती है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण महंगे और बेहतर इलाज की कल्पना करना भी संभव नहीं था। समय बीतता गया, लेकिन पिता रमण और माता रितु देवी ने कभी हिम्मत नहीं हारी। इलाज की उम्मीद में वे हर उस स्थान पर गए, जहाँ कहीं आशा की किरण दिखाई दी परंतु हर बार निराशा ही हाथ लगी।

इसी दौरान मौसी की बेटी और सोशल मीडिया के माध्यम से उन्हें उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान द्वारा किए जा रहे निःशुल्क पोलियो उपचार एवं सेवा कार्यों की जानकारी मिली, जिससे उनके मन में एक नई उम्मीद जगी। मई 2024 में माता–पिता चांदनी को लेकर उदयपुर स्थित संस्थान पहुँचे, जहाँ विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा उसकी गहन जाँच की गई और निःशुल्क शल्य चिकित्सा प्रारंभ की गई। करीब चार ऑपरेशन और दो बार इलिजारोव तकनीक से किए गए सफल उपचार के बाद चांदनी के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन देखने को मिला। दिसंबर 2025 में पुनः फॉलोअप के लिए जब वह संस्थान आई, तो पहले की तुलना में कहीं बेहतर ढंग से खड़ी हो पा रही थी और आत्मविश्वास के साथ अपने भविष्य की ओर कदम बढ़ा रही थी। यह परिवर्तन केवल शारीरिक सुधार तक सीमित नहीं था, बल्कि यह आशा, आत्मबल और एक नए जीवन की सशक्त शुरुआत का प्रतीक भी था।

शुभ के सृजन का दुर्लभ अवसर

महाशिवरात्रि फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी को मनाया जाने वाला एक महान पर्व है। 'शिव' शब्द का अर्थ है' सुख, कल्याण और मोक्ष। शिवरात्रि को सुख एवं कल्याण प्रदान करने वाली रात्रि माना गया है। भगवान शिव देवों के भी देव हैं, इसीलिए उन्हें महादेव कहा जाता है।

महाशिवरात्रि भगवान शिव से मिलन का शुभ अवसर है। मान्यता है कि इसी पावन रात्रि में निशीथ काल, अर्थात् अर्धरात्रि में शिवलिंग प्रकट हुआ था। यह पर्व केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना के जागरण का भी पर्व है। यह हमारी अंतरात्मा को जाग्रत करता है और जीवन में प्रसन्नता, ऊर्जा, सामंजस्य, सौहार्द और सकारात्मक दृष्टि प्रदान करता है। महाशिवरात्रि को शिव–पार्वती के विवाहोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। यह पर्व मनुष्य के लिए एक अवसर और संभावना है–अपने भीतर छिपे असीम शून्य और चेतना के अनुभव को प्राप्त करने का। यही शून्य समस्त सृष्टि का मूल बीज है।

भगवान शिव आदिदेव, देवाधिदेव और महादेव हैं। वे संहारकर्ता भी हैं और कल्याणकर्ता भी। वे भोले–भंडारी हैं–जो सच्चे मन से उन्हें पुकारता है, उसकी सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। सृष्टि के कल्याण हेतु पुराने, जर्जर और नकारात्मक विचारों का विनाश आवश्यक है, और इसी विनाश में नव–निर्माण का बीज निहित है।

जब–जब सृष्टि पर संकट आया, महादेव सदैव समाधान के लिए अग्रणी रहे। समुद्र मंथन से निकले हलाहल विष का पान कर उन्होंने सृष्टि को विनाश से बचाया। गंगा के पृथ्वी पर अवतरण में भी भोलेनाथ की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव की पूजा एवं अभिषेक करने से समस्त तीर्थों के स्नान का पुण्य प्राप्त होता है। इस दिन व्रत, साधना और दान करने वाला व्यक्ति जीवन के समस्त भोगों का अनुभव करते हुए अंततः शिवलोक को प्राप्त होता है और शिव में ही लीन हो जाता है।

शिव पूजा में बिल्वपत्र और धतूरा पुष्प अत्यंत प्रिय माने गए हैं। अभिषेक में दूध, दही, घी, शहद और मिश्री से बना पंचामृत विशेष फलदायी होता है। महाशिवरात्रि पर महामृत्युंजय मंत्र का जप विशेष महत्व रखता है। यह मंत्र मन, शरीर और आत्मा को शांति प्रदान करता है और उपासक को शिवत्व की अनुभूति कराता है।

शिव और शक्ति के मिलन की इस पावन रात्रि में की गई साधना से जीवन के समस्त संतापों का नाश होता है और मानव जीवन आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होता है।

भूणाव में 102 दिव्यांगजन को मिले कृत्रिम अंग – कैलीपर

सेवा, संवेदना और आत्मनिर्भरता के संकल्प के साथ संस्थान के तत्वावधान तथा मातृश्री शांताबेन त्रिभोवनदास चैरिटेबल ट्रस्ट (टी.एम.टी. परिवार, भूणाव) के सौजन्य से 30 दिसम्बर 2025 को भूणाव (गुजरात) में नारायण लिम्ब एवं कैलीपर वितरण शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर उन भाई–बहिनों के जीवन में नई उम्मीद लेकर आया, जिन्होंने सड़क दुर्घटनाओं अथवा अन्य हादसों में अपने हाथ–पैर खो दिए थे। शिविर के माध्यम से 40 नारायण कृत्रिम अंग एवं 62 कैलीपर प्रदान किए गए, जिससे अनेक परिवारों के जीवन में फिर से आत्मविश्वास की लौ जाग्रत हुई। शिविर के मुख्य अतिथि ए.पी.एम.सी. ऊंझा के चेयरमैन श्री दिनेशभाई पटेल रहे, जबकि अध्यक्षता मातृश्री शांताबेन त्रिभोवनदास चौरिटेबल ट्रस्ट के प्रमुख श्री हरीशभाई पटेल ने की। विशिष्ट अतिथियों में समाजसेवी श्री प्रवीणभाई पटेल, श्री बलदेवभाई पटेल तथा मसिया महादेव मंदिर के चेयरमैन श्री जयंतीभाई पटेल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अतिथियों के कर–कमलों से जरूरतमंद दिव्यांगजनों को 7 व्हीलचेयर, 10 वॉकर एवं 12 जोड़ी बैसाखियाँ भी प्रदान की गईं। इन सहायक उपकरणों ने न केवल शारीरिक सहारा दिया, बल्कि दिव्यांगजनों के मन में आत्मबल, आत्मसम्मान और स्वतंत्र जीवन जीने की नई आशा का भी संचार किया।

संस्थान प्रणेता को प्रणाम

सेवा संकल्प के साथ मनाया गया पूज्य गुरुदेव का 78वां जन्मदिवस

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक एवं राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री से अलंकृत पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी मानव का 78वां जन्मदिवस 2 जनवरी को वर्ल्ड ऑफ ह्यूमिनिटी परिसर में सेवा, सादगी और मानवीय संवेदना के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर दिव्यांगों एवं जरूरतमंद गरीबों को फल, कंबल एवं सहायक उपकरण वितरित किए गए तथा सामूहिक भोज हुआ।

अपने सारगर्भित उद्बोधन में गुरुदेव ने कहा कि आज यह संस्थान देशभर में पीड़ित मानवता की सेवा हेतु अनेक सेवा प्रकल्पों का सफल संचालन कर रहा है। लाखों सेवा–प्रेमियों का सहयोग, विश्वास और आशीर्वाद ही संस्थान की सबसे बड़ी पूंजी है। उन्होंने सभी सहयोगियों, दानदाताओं एवं साधक–साधिकाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि "प्रतिदिन हजारों गरीबों और दिव्यांगों के चेहरों पर खिलती मुस्कान ही मेरे जन्मदिवस की सच्ची सार्थकता है।" इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि हर लाभार्थी दिव्यांग की दुआओं से नारायण सेवा संस्थान को प्रतिदिन नई शक्ति और ऊर्जा प्राप्त होती है, जिसके बल पर संस्थान देश के कोने–कोने

तक पहुँचकर सेवा शिविरों का आयोजन कर रहा है। उन्होंने कहा कि गुरुदेव ही संस्थान के प्रेरणा–पाथेय और सेवा यात्रा के मूल स्तंभ हैं। उनका अभिनंदन–वंदन कर हम स्वयं को कृतार्थ अनुभव करते हैं। वे दीर्घायु हों, उन्हें शत–शत प्रणाम। गुरुदेव के जन्मदिवस के अवसर पर देश के विभिन्न राज्यों से सैकड़ों सेवा–प्रेमियों ने ऑडियो एवं वीडियो संदेशों के माध्यम से अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

इस अवसर पर गुरुमाता श्रीमती कमलादेवी जी, निदेशक वंदना जी अग्रवाल, महर्षि जी अग्रवाल, सुरेंद्र जी सलूजा, जगदीश जी आर्य, पलक जी अग्रवाल, देवेंद्र जी चौबीसा सहित सैकड़ों सेवाभावी साधक–साधिकाएँ उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन महिम जैन ने किया।

वनवासी अंचल में

कोटड़ा के खामगांव में 5 हजार जरूरतमंदों तक

वनवासी अंचल की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बीच जब सेवा की भावना धरातल पर उतरती है, तो वह केवल सहायता नहीं, बल्कि आशा और विश्वास का उत्सव बन जाती है। ऐसा ही प्रेरणादायी दृश्य 21 दिसम्बर को उदयपुर (राजस्थान) जिले की आदिवासी बहुल कोटड़ा तहसील के खामगांव में देखने को मिला, जहाँ संस्थान द्वारा आयोजित विशाल निःशुल्क अन्न एवं वस्त्र वितरण सेवा शिविर ने मानव करुणा का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत किया।

मानवता का उत्सव

पहुँची अन्न, वस्त्र और आत्मबल की रोशनी

इस सेवा शिविर से 5000 से अधिक जरूरतमंद, वंचित एवं वनवासी परिवारों को प्रत्यक्ष लाभ मिला। शीत ऋतु की कंपकंपी के बीच यह आयोजन गरीब एवं असहाय परिवारों के लिए सुरक्षा, संबल और सम्मान का माध्यम बना।

सामूहिक भोज व सेवा के साथ अपनत्व का संदेश – शिविर के दौरान 3000 से अधिक लोगों को गरम गुड़ मिश्रित खिचड़ी का सामूहिक भोज कराया गया, जिसमें लगभग 1200 किलोग्राम अनाज का उपयोग हुआ। यह भोजन केवल

भूख मिटाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समानता, अपनत्व और सेवा भाव का सशक्त प्रतीक बना।

शीत से सुरक्षा: वस्त्र और आवश्यक सामग्री का वितरण – सर्दी से बचाव हेतु 2000 कंबल महिला एवं पुरुषों को वितरित किए गए। इसके साथ ही जरूरतमंद परिवारों को 500 धोती, 500 लुगड़ी, 1000 बच्चों की ड्रेस, 500 अतिरिक्त बच्चों की ड्रेस, 500 जोड़ी जूते– चप्पल, 500 पुरुष स्लीपर, 100 बच्चों के अंडरगारमेंट सेट, 1500 स्वेटर, मोजे एवं अन्य ऊनी वस्त्र, तथा 1500 स्नान सामग्री किट (साबुन, टूथपेस्ट, ब्रश, कंघी आदि) वितरित की गईं। यह वितरण वस्तुओं के साथ–साथ मानवीय गरिमा और आत्मसम्मान की अनुभूति भी प्रदान करता रहा।

अतिथियों के विचार: सेवा कार्यों की सराहना – शिविर के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के जनजाति मंत्री श्री बाबूलाल खराड़ी ने संस्थान के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि संस्थान वर्षों से निःस्वार्थ भाव से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सहायता पहुँचाने का कार्य कर रहा है। उन्होंने आदिवासी अंचलों में संस्थान द्वारा संचालित शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण सेवाओं को जीवनदायिनी बताया।

सेवा का संकल्प: आशा और आत्मबल की नई रोशनी – इस अवसर पर संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया ने कहा कि "यह सेवा शिविर इस बात का प्रमाण है कि जब सेवा के लिए समाज एकजुट होता है, तब जरूरतमंदों के जीवन में केवल राहत ही नहीं, बल्कि आशा, विश्वास और आत्मबल की नई रोशनी भी जगाई जा सकती है।"

> **"यह सेवा शिविर केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि उस सामूहिक संकल्प का प्रतीक बना, जहाँ करुणा, सहयोग और मानवता ने मिलकर वनवासी अंचल में उम्मीद की लौ प्रज्वलित की।"**

झीनी-झीनी रोशनी-81

इस अजीब से अनुरोध से लोग हतप्रभ रह गये। उन्हें कुछ समझ में नहीं आया, एक मुट्ठी आटे से क्या होगा? सब के मन में यही सवाल था। हर कोई 5 किलो, 10 किलो या इससे भी अधिक आटा देने को तत्पर था।

कैलाश जी ने उन लोगों की जिज्ञासा शांत करते हुए अपना मंतव्य समझाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा– मेरी मां रोज एक रोटी गाय के लिये निकालती और सबसे अंतिम रोटी कुत्ते के लिये। सबके घरों में प्रतिदिन ऐसा ही होता है। जिस तरह रोटी निकालने की आदत पड़ गई है उसी तरह यदि एक मुट्ठी आटा निकालने की आदत पड़ जाये तो यह दरिद्र नारायण की महान सेवा होगी। कैलाश जी के इतना कहते ही कमला जी बोल पड़ी कि नारायण के पहले दरिद्र क्यूं लगाया आपने? कैलाश जी कुछ कहें इसके पहले ही अपनी बात जारी रखते हुए वे बोली– लालची को कितना भी मिल जाये फिर भी वह और अधिक चाहता है।

वह होता है दरिद्र। मगर नारायण तो लालची नहीं होता। कैलाश जी ने अपनी पत्नी से तर्क करना उचित नहीं समझा और उसकी बात मानते हुए कहा– ठीक है दरिद्र नारायण की सेवा नहीं वरन नारायण सेवा करेंगे।

यज्ञ में उपस्थित कई महिलाएं प्रतिदिन एक मुट्ठी आटा निकालने के लिये तैयार हो गई। कैलाश जी ने भी उत्साह में कह दिया कि वह घन्टे भर बाद सबके घर में पहुंचेंगे। आप सब लोग एक डिब्बा अलग बना लो। सभी महिलाएं अपने–अपने घर लौट गई, इधर कैलाश जी बापू बाजार गए और लाल रंग के पेन्ट का डिब्बा व ब्रश खरीद कर ले आए। दोनों चीजें लेकर वे पहले घर आये। गृहिणी ने एक डिब्बा अलग बनाकर उसमें एक मुट्ठी आटा डाल दिया था। कैलाश जी रंग व ब्रश लेकर उस डिब्बे पर निशान बनाने लगे ताकि यह घर के अन्य डिब्बों से अलग नजर आये। वे सोच रहे थे कि क्या निशान बनाये तभी अपनी पत्नी कमला जी की बात उन्हें याद आई। उन्होंने सोचा क्यूं नहीं डिब्बे पर नारायण सेवा ही लिख दिया जाये। उन्होंने ऐसा ही किया और डिब्बे को गृहिणी की रसोई में चूल्हे के पास रख दिया। कैलाश जी ने कमला जी को कहा कि यह डिब्बा अब रोज आपके सामने रहेगा, आप जब भी रोटी बनाने आटा निकालोगी तो एक मुट्ठी आटा इसमें डालने का स्मरण हो आएगा।

कमला जी ने कहा कि आटा तो हम नियमित डाल देंगे मगर यह गरीबों तक कैसे पहुंचेगा। कैलाश जी ने उनकी शंका का समाधान करते हुए बताया कि आपको सिवाय एक मुट्ठी आटा रोज डालने के और कुछ नहीं करना है। आपके यहां से आटा हम इकट्ठा कर ले जायेंगे। यही बात उन्होंने अगले तीन–चार घरों की महिलाओं को भी समझाई। इन सबके घर खाली डिब्बे मिल गये थे मगर अगले घर में कोई खाली डिब्बा नहीं था। यह समस्या अन्य घरों में भी आ सकती थी इसलिए कैलाश जी ने कुछ खाली डिब्बे लाकर रखने की सोची। क्रमशः

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़
भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/à नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001
बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर
अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर
जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012
अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर
बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
ब्व्व पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग
रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़
धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम
जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर
भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला – भोपाल
बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 08989609714, बखतगढ,
त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला
परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343
नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़
पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375
मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708,
10–बीध्बी, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई
भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट–बिघरी, त. बदसर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

.....

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल
जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद
पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल
फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा
करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001
अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001
नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रू बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली
हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद
हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,
कबाड़ी बाजार,
हापुड़
गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

.....

श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा
बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर
बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद
जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
प्ट्ध1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई

मो. 09529920090,07073452174
09529920088
शिवे सृष्टि सीएचएस लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 4–बी, फ्लैट नंबर 608, बॉम्बे डाईंग महादा बोइवाड़ा, नयागांव, दादर (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र) पिनकोड 400014

पूणे

मो. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे–16

दिल्ली

रोहिणी

मो. 08588835718
08588835719, बी–4/67, सेक्टर–8, रोहिणी, दिल्ली, पिन कोड 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली

07023101167, 07412060406
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली

मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

हरियाणा

गुरूग्राम

मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी. आर.पी.एफ. केम्प चौक, गुरुग्राम – 122001

हिसार

मो. 9257017593, मकान न. 2249, सेक्टर–14, हिसार 125005

पंजाब

लुधियाना

मो. 07023101153
311/312, बी–17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़

मो. 07073452176
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर – 46–सी, चंडीगढ़–160047

बिहार

पटना

मो. 09257110805, मकान नं.–23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

उत्तर प्रदेश

मेरठ

मो. 09257110802
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ

मो. 09351230395
फ्लेट नम्बर 202, गुरूकृपा अपार्टमेंट न्यू श्रीनगर आलमबाग लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

राजस्थान

जोधपुर

मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा

मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2–वी–5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

अजमेर

नारायण सेवा संस्थान C/O श्रीमती. कैलाश उपाध्याय पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वप्रकाश उपाध्याय मकान नं. 68, माली मोहल्ला, आनासागर लिंक रोड, शिव मार्ग, कृष्णा गंज, अजमेर (राजस्थान) 305001
मो. नं. 9216022978

गुजरात

सूरत

मो. 09529920082
27, सम्राट टाऊनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा

मो. 09529920081
मकान नंबर ए–2/5, सिद्धार्थ पार्क, साईदीप नगर के पास, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू वीआईपी रोड, बड़ौदा (गुजरात), पिनकोड 390022

अहमदाबाद

मो. 09529920080, 08306008208
07/ए, कपिलकुंज सोसायटी, विजय नगर के सामने, मेट्रो स्टेशन, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) पिनकोड 380013

(कर्नाटक)

बेंगलुरू

मो. 09341200200, नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुड़ी, बेंगलुरु–560004

वेस्ट बंगाल

कोलकाता

09529920097, मकान नंबर–580, स्वामी सारणी ग्वाला, बागान, कालांदी, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिनकोड 700048

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस

मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा

मो. 07023101163
मकान नं. 212ध्53, राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी आवास बिल्डिग, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़

मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद

मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन निःशुल्क फिजियोथेरपी सेंटर, बी.–350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद – 201009

लोनी

मो. 9257110802
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा

मो. 07023101174
मकान नंबर ई–52, किडजी स्कूल के पास, कमला नगर, आगरा (उत्तर प्रदेश) पिन कोड रू 282005

छत्तीसगढ़

रायपुर

मो. 07869916950, 08306004806
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.–2, फेस–2 श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर रायपुर, (छ.ग.)

गुजरात

राजकोट

मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिर्वसिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून

मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी

मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा

मो. 07073474435, बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

मध्य प्रदेश

इन्दौर

मो. 09529920087
43, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर–452018

हरियाणा

अम्बाला

मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल

मो. 08696002432
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर

मो. 09928027946, 09257110807
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिचर्स सेन्टर बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद

मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122/123 इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन-नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.
100 दिव्यांग एवं निर्धन बच्चों की भोजन सेवा	3,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,0000 रू.	50,0000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI

Google Pay PhonePe Paytm

narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

जीवन की लय को ठीक करे 'प्राकृतिक चिकित्सा'

बार–बार जुकाम, थकान, बेचैनी और नींद की कमी अब सिर्फ मौसम नहीं, बल्कि शरीर की थमी हुई प्रतिरक्षा का संकेत माना जाता है। लगातार दवा–निर्भरता, स्क्रीन–ओवरलोड और अनियमित जीवनशैली ने हमारी प्राकृतिक हीलिंग क्षमता को कमजोर कर दिया है। ऐसे में बड़े शहरों से लेकर छोटे कस्बों तक के लोग फिर से नेचुरोपैथी (प्राकृतिक चिकित्सा) की और लौट रहे हैं। आपके अपने नारायण सेवा संस्थान द्वारा संचालित नारायण–महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय जीवन की लय को बरकरार रखने में सक्रिय है। जटिलतम रोगों से अनेक महानुभाव यहाँ से राहत पाकर अपने घरों में सुकून की जिंदगी जी रहे हैं। असल में आज सबसे बड़ी बीमारी है डिसकनेक्शन यानी प्रकृति, शरीर और मन से अलगाव। नैचुरोपैथी इस टूटे रिश्ते को जोड़ने की चिकित्सा है। इसमें औषधियों के बजाय जीवनशैली, आहार, सूर्य, जल, मिट्टी और श्वास की शक्ति को सक्रिय किया जाता है। जटिलतम रोग से ग्रस्त महानुभाव एक बार जरूर पधारें। आने से पूर्व संपर्क करें। यहाँ आपको रोग से राहत मिलेगी। संतोष पूर्वक जीवन जी सकेंगे। क्योंकि यहाँ इलाज नहीं, लाइफस्टाइल इंजीनियरिंग होती हैं, जिसका निर्वाह करती है, प्रकृति स्वयं चिकित्सक बनकर। हर व्यक्ति के लिए थर्मल बैलैंस, डाइजेस्टिव पैटर्न, तनाव स्तर को देखकर आहार सुनिश्चित किया जाता है।

नेचुरोपैथी से बदली सेहत

डॉ. श्वेता – हनुमानगढ़

हनुमानगढ़ निवासी 33 वर्षीय डॉ. श्वेता लंबे समय से बैक पेन और बढ़ते वजन की समस्या से परेशान थीं। नेचुरोपैथी केंद्र में 10 दिन का उपचार लेने के बाद उनकी सेहत में बड़ा बदलाव आया। उपचार के दौरान योग, एब्डोमिनल पैक, हाइड्रोथेरेपी और विशेष डाइट प्लान दिया गया। सही खान–पान और नियमित थेरेपी की मदद से उनका 5 किलो वजन कम हुआ और बैक पेन में लगभग 60: तक आराम मिला। आज डॉ. श्वेता खुद को पहले से अधिक स्वस्थ, ऊर्जावान और फिट महसूस करती हैं। उनका मानना है कि नेचुरोपैथी प्राकृतिक रूप से स्वास्थ्य सुधारने का बेहतरीन माध्यम है।

नारायण महावीर
प्राकृतिक चिकित्सालय

Call For Details
91-7023509999

Seva Soubhagya Print Date 1 February, 2026 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages-20 (No. of copies printed 1,50,000) cost-Rs.5/-